वेदों की ओर लौटो !

॥ ओ३म् ॥

॥ कृण्वन्तो विश्वमार्यम् ॥

श्रेष्ठ मानव बनो !

वेद प्रतिपादित मानवीय मूल्यों को जन-जन तक पहुँचाने
हेतु कार्यतत्पर सशक्त एवं समर्थ प्रान्तीय आर्य संगठन

वेदोद्धारक, युगप्रवर्तक
महर्षि दयानन्द

महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा का
मासिक मुखपत्र

वैदिक गर्जना

तपस्वी व्यक्तित्त्व की जन्मशताब्दी
पू.स्वामी श्रद्धानन्दजी
(हरिश्चन्द्र गुरुजी)

वर्ष १८ अंक ३ १० मार्च २०१८

जय जय मर्यापुरुषोत्तम धर्म धुरन्धर।
जय-जय एकादर्श भूमिपति महावीर वर॥

स्वास्थ्यरक्षा शिविर

प्रान्तीय सभा द्वारा परली के गुरुकुल आश्रम में आयोजित 'स्वास्थ्यरक्षा प्रशिक्षण शिविर' में सम्मिलित शिविरार्थी एवं प्रशिक्षणार्थी।

लातूर का वार्षिकोत्सव

आर्यसमाज गांधी चौक लातूर के वार्षिकोत्सव पर मार्गदर्शन करते हुए वैदिक प्रवक्ता आचार्य श्री आनंदजी पुरुषार्थी। साथ में हैं स्वामी श्रद्धानन्दजी एवं अन्य विद्वद्गण।

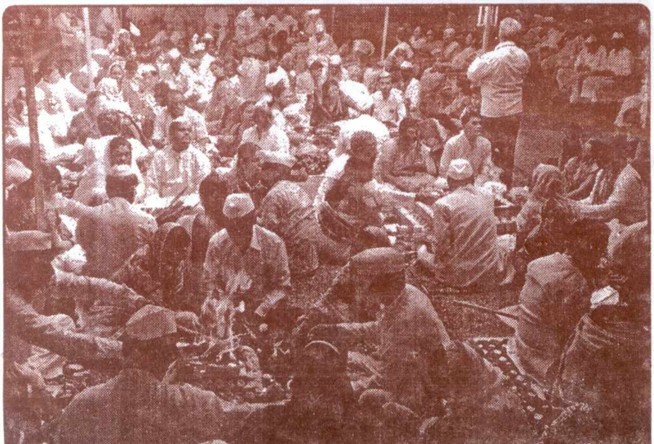

उत्सव के दौरान आचार्य पुरुषार्थीजी के प्रभावशाली ब्रह्मत्व में आयोजित १४कुंडीय विशेष यज्ञ में लगभग ५८ यजमानों ने सम्मिलित होकर श्रद्धापूर्वक आहुतियाँ दी।

महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा का

मासिक मुखपत्र

वैदिक गर्जना

सृष्टि सम्वत् १,९६,०८,५३,११९   कलि संवत् ५११९   विक्रम संवत् २०७५

दयानन्दाब्द १९४   चैत्र   १० मार्च २०१८

प्रधान सम्पादक	मार्गदर्शक सम्पादक	सम्पादक
माधव के.देशपांडे	डॉ.ब्रह्ममुनि	डॉ.नयनकुमार आचार्य
(९८२२२९५५४५)	(९४२१९५१९०४)	(९४२०३३०१७८)

सहसम्पादक प्रा.देवदत्त तुंगार(९३७२५४१७७७) प्रा.ओमप्रकाश होलीकर(९८८१२११६१६), प्रा.सत्यकाम पाठक(९९७०५६२३५६), ज्ञानकुमार आर्य(९६२३८४२२४०)

अनुक्रम

हिन्दी विभाग

१) श्रुतिसुगंध ४

२) सम्पादकीय ५

३) सभा निर्वाचन-सूचना ६

४) आर्य समाज मुख्यधारा से कैसे कटा? ७

५) श्रीराम गुण-गान(काव्य) १२

६) स्वामी श्रद्धानन्दजी(गुरुजी)शताब्दी समारोह-निमंत्रण...... १३

मराठी विभाग

१) उपनिषद संदेश/दयानंद वाणी १७

२) आर्य समाज आज, काल आणि उद्या १८

३) महती यज्ञाची... हमी सुखाची(काव्य)........ २२

४) वात्सल्यमूर्ती माता त्रिवेणीबाई लोखंडे........ २४

५) सभावार्ता २६

६) वार्ताविशेष २७

७) निधन वार्ता २८

८) सभा उपक्रम ३०

*** प्रकाशक ***

मन्त्री, महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा,
सम्पर्क कार्यालय-आर्य समाज,
परली-वैजनाथ ४३१५१५

*** मुद्रक ***

वैदिक प्रिन्टर्स
महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा
आर्य समाज, परळी-वै.

वैदिक गर्जना के शुल्क

वार्षिक रु.१००/-

आजीवन रु.१०००/-

इस मासिक पत्रिका में प्रकाशित लेखों तथा विचारों से सम्पादक मण्डल सहमत हो, यह अनिवार्य नहीं है। किसी भी विवाद की परिस्थिति में न्यायक्षेत्र परली-वैजनाथ जि.बीड ही होगा।

श्रुतिसुगंध — इन्द्रियों में बल की कामना..

ऋचं वाचं प्र पद्ये मनो यजुः प्र पद्ये ।
साम प्राणं प्र पद्ये चक्षुः श्रोत्रं प्र पद्ये ।
वागोजः सहौजो मयि प्राणापानौ।। (यजु.३६/१)

पदार्थान्वय- हे मनुष्यो! जैसे**(मयि)** मेरे आत्मा में**(प्राणापानौ)** प्राण और अपान, ऊपर-नीचे के श्वास दृढ हों। मेरी**(वाक्)** वाणी **(ओजः)** मानस बल को प्राप्त हो, उस वाणी और उन श्वासों के **(सह)** साथ मैं**(ओजः)** शरीर बल को प्राप्त होऊं **(ऋचम्)** ऋग्वेद रूप **(वाचम्)** वाणी को**(प्र, पद्ये)** प्राप्त होऊं**(मनः)** मनन करनेवाले के तुल्य **(यजुः)** यजुर्वेद को**(प्र, पद्ये)** प्राप्त होऊं **(प्राणम्)** प्राण की क्रीया अर्थात् योगाभ्यासादिक उपासना के साधक**(साम)** सामवेद को **(प्र, पद्ये)** प्राप्त होऊं **(चक्षुः)** उत्तम नेत्र और **(श्रोत्रम्)** श्रेष्ठ कान को **(प्र, पद्ये)** प्राप्त होऊं, वैसे तुम लोग इन सबको प्राप्त होओ।

भावार्थ - इस मन्त्र में वाचकलुप्तोपमालंकार है। हे विद्वानों के (यजुर्वेद-३६/१) संग से मेरी ऋग्वेद के तुल्य प्रशंसनीय वाणी, यजुर्वेद के समान मन, सामवेद के सदृश प्राण और सत्रह तत्त्वों से युक्त लिंग शरीर स्वस्थ, सब उपद्रवों से रहित और समर्थ होवे।

वैदिक सृष्टि नवसंवत्सर(१९६०८५३११९) नूतन कलिसंवत् ५११९,
विक्रम नवसंवत् २०७५ तथा शालिवाहन शक १९४०

नववर्ष की तथा आर्यसमाज के १४४ वे स्थापना दिवसपर

देशवासियों को हार्दिक शुभकामनाएँ !

***

भारतीय वैदिक संस्कृति के आधारस्तंभ, आदर्श प्रजापति,

मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम के जन्मदिवस पर

शतशः विनम्र अभिवादन!

संपादकीयम्

आओं, कुछ संकल्प करें...!

संगठन छोटा हो या बडा अथवा उसकी विचारधारा साधारण भी क्यों न हो, यदि उसके अनुयायी व कार्यकर्त्ता उन सिद्धान्तों पर एकनिष्ठ होकर चलते हों, तो निश्चय ही उसका भविष्य उज्ज्वल माना जाता है। इसके विपरीत यदि विचारधारा महान हो और संगठन भी श्रेष्ठ हो, किन्तु उनके अनुयायियों में सिद्धान्तों के अनुसार आचरण, समर्पण, त्याग आदि बातों का अभाव न हो, तो उसका भविष्यकाल यशस्वी नहीं माना जाता। क्योंकि समर्पित कार्यकर्त्ता ही उस संस्था या संगठन की विशेष पहचान होती है । महर्षि दयानन्द द्वारा सन १८७५ में स्थापित 'आर्य समाज' यह संगठन एक समय प्रगति के शिखर पर था। उसका भूतकाल सुनहरे अक्षरों में लिखा गया । इतिहास में आज भी आर्य समाज का नाम बडे गौरव से अंकित है। राष्ट्रीय, सामाजिक, धार्मिक व राजनैतिक क्षेत्र में आर्य समाजियों की एक विशेष प्रतिष्ठा थी । शिक्षाजगत् में कार्यरत एक से एक बढकर विचारविद्, तत्त्ववेत्ता तथा विद्वान पंडित स्नातकों की प्रतिभा ने उस समय जन-जन को प्रभावित किया था। स्वतन्त्रता की प्राप्ति के लिए तथा देश में जितने भी राष्ट्रीय आन्दोलन हुए, उनमें आर्य समाज द्वारा दिए बलिदान को कौन भूल सकता है ? दुर्भाग्य से वेदप्रचार, समाजसुधार तथा धार्मिक कार्यों को प्राथमिकता देने के कारण यह संगठन राजनीति से सदैव दूर रहा, या इसने स्वयं को दूर रखा। फलस्वरूप आजादी के लिए सर्वाधिक योगदान देनेवाले तथा ईश्वरीय सत्यव्यवस्था को स्थापित करने की मनीषा रखनेवाले इस वैश्विक संगठन के अनेकों विद्वान व नेतागण अन्य पार्टियों से जुडते गये। आन्तरिक दृष्टि से भले ही उनमें आर्यत्व था, किन्तु बाह्यजगत् में वे कांग्रेसी, जनसंघी, समाजवादी, साम्यवादी बनकर अपना प्रभाव जमाते रहे। परिणामतः आर्य समाज का महत्त्व कम होते गया। बढते भौतिक वातावरण व अन्य संगठनों के विद्वान, नेता तथा प्रचारक अपनी स्वयं की छाप बना नहीं पाये। आज १४४ वर्ष के बाद आर्य समाज की स्थिति क्या से क्या हुई है, यह विचारणीय विषय है।

आज सैद्धांतिक बाजू कमजोर बनी है और आर्यत्व के बजाय हिन्दुत्व को अपनाने में हम गर्व महसूस कर रहे है। हमारा अस्तित्व ही हम भूल गये। वैदिक विचारधारा के संवर्धन के बजाय इसका संरक्षण करने में ही हम पीछे रह चुके है। महर्षि दयानन्द की अपूर्व तपस्या के फलस्वरूप हजारों वर्षों बाद हमें वेद का विशुद्ध तत्त्वज्ञान मिला। मानवता की सच्ची राह मिल गयी। जीवन जीने का वास्तविक तरीका मिल गया। विश्व के समस्त मानवसमूह के साथ ही प्राणिमात्र के सम्पूर्ण कल्याण का

एकमात्र वेद पथ ही है, यह जानते हुए भी हम इस सत्य से दूर क्यों? हमारी कथनी और करनी में समानता क्यों नहीं? गुरुकुल से पढकर निकला स्नातक वर्ग अन्यों की भाँति अध्यापनादि में संलग्न होकर केवल रोजी-रोटी के लिए जी रहा है। वेद का सिद्धान्त जन-जन तक कैसे पहुँचे ? इसके लिए न तो कोई ठोस कार्यक्रम है और न ही किसी में इसके लिए समर्पण की भावना है? आर्य परिवार नाम के रह गये हैं। आर्य अपने दादा-दादी व नाना-नानी की चर्चा करने में ही हम समाधान व्यक्त कर रहे हैं।

आध्यात्मिक जीवन से हमने नाता तोड दिया है। संध्या, ईश्वर-चिन्तन, आत्मकल्याण आदि बातें केवल नाम की रह गयी। आर्यसमाजों के भवन खाली पड रहे है, या वहाँ पर अन्य लोग कब्जा कर रहे हैं। केवल वार्षिकोत्सव या पर्व मनाने में ही हम संतोष मान रहे हैं। विद्यार्थियों, नौजवानों के लिए हमारे पास देने को बहुत ही है, किन्तु उसके लिए कोई रूपरेखा या कार्यक्रम नहीं है। तब कैसे 'कृण्वन्तो विश्वमार्यम्' का सपना साकार होगा? आओं इस पर कुछ ठोस चिन्तन करें और आर्य समाज के गौरव को वापिस लौटायें!

- नयनकुमार आचार्य

महाराष्ट्र सभा का त्रैवार्षिक निर्वाचन

९ व १० जून २०१८ / स्थान : श्रद्धानंद गुरुकुल, परली

-: सूचना :-

महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा का त्रैवार्षिक निर्वाचन अधिवेशन आगामी दि.९ व १० जून २०१८ को सभा के सम्पर्क कार्यालय परली-वैजनाथ (जि.बीड) में होगा। श्रद्धानंद गुरुकुल आश्रम में आयोजित इस अधिवेशन में दि.९ जून को सायंकाल ४ बजे निवर्तमान अंतरंग सदस्यों की तथा रात्रि में ८ बजे निवर्तमान साधारण सदस्यों की बैठके होगी। दूसरे दिन रविवार दि.१० जून को प्रात: ७.३० बजे यज्ञ व अल्पाहार के पश्चात् ९ बजे सभी आर्य समाजों द्वारा भेजे गये नये प्रतिनिधियों की उपस्थिति सभा में **'त्रैवार्षिक निर्वाचन अधिवेशन'** होगा।

अत: सभान्तर्गत सभी आर्य समाजें अपने नये सभा प्रतिनिधियों की सूची व उनके शुल्क तथा अपनी आर्य समाजों का दशांश शुल्क निर्वाचन अधिवेशन से पहले ही भेज देंवें। अन्यथा वे प्रतिनिधि सभा निर्वाचन में भाग नहीं ले सकेंगें। लातूर में सम्पन्न हुई सभा की संयुक्त बैठक में यह निर्वाचन की तिथियां निश्चित की गयी।

- मंत्री, महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधी सभा

स्थापना दिवसपर चिन्तनपर लेख...

आर्यसमाज मुख्य धारा से कैसे कटा ?

– (स्व.) डॉ. धर्मवीर आचार्य

आर्यसमाज के सिद्धान्त और विचार जितने महत्त्वपूर्ण पहले, थे उतने ही आज भी है। उनकी प्रासंगिकता को लेकर प्रश्न चिह्न नहीं लगाया जा सकता क्योंकि उनकी सत्यता स्वत: सिद्ध है। व्यक्ति, परिवार, समाज और राष्ट्र के लिये उनकी आवश्यकता कभी समाप्त होनेवाली नहीं है। फिर संगठन क्यों पिछड गया? उसके हाथ से समाज का नेतृत्व कब छिन गया? और आज वह अन्य संगठनों का पुच्छरूप हो गया, इस विषय पर अनेक लोग समय-समय पर विचार करते हैं। इन लोगों में अधिकांश आत्म-प्रताडना तक ही सीमित रह जाते हैं। आर्यसमाजी लोग निष्ठावान् नहीं रहे, परिवार को आर्य नहीं बना पाये आदि आदि, परन्तु इसके मुख्य कारण पर ध्यान कम ही जाता है।

समाज की स्थापना के समय जो लोग इस संगठन से जुडे, उन्होंने इसे पूर्ण रूप से स्वीकार किया। अत: उनके जीवन की प्राथमिकता आर्यसमाज रहा। इसी कारण इसका प्रचार-प्रसार तेजी से होता रहा। इस विचारधारा ने समाज का कोई क्षेत्र ऐसा नहीं छोडा, जिसको उसने आन्दोलित न किया हो। सामाजिक और राजनैतिक चेतना में तो आर्यसमाज के विचारों ने क्रान्ति ही ला दी, परिणामस्वरूप समाज के नेताओं को उनकी तेजस्विता व प्रखरता के कारण समाज के अन्य क्षेत्रों में प्रमुख स्थान भी मिला। राजनीतिक और सामाजिक संगठनों में उनकी भूमिका महत्त्वपूर्ण रही। ऐसे नेताओं ने अपनी भूमिका के निर्वाह करने में संशय अनुभव किया, उनके कार्य में आर्यसमाज और अन्य संगठनों में कार्य करते हुए विरोध उत्पन्न हुआ तो उनके लिए आवश्यकता थी कि वे किसी एक पथ को महत्त्व दें, जिन लोगों की प्राथमिकता आर्यसमाज थी, उन्होंने दूसरे संगठनों के महत्त्वपूर्ण पदों को ठोकर मार दी, जिनमें प्रमुख रूप से जो नाम उभरकर आता है वह 'स्वामी श्रद्धानन्द' का है, उन्होंने कांग्रेस में काम करते हुए अपनी कर्मठता और राष्ट्रभक्ति के कारण लाहौर कांग्रेस अधिवेशन के स्वागताध्यक्ष का दायित्व संभाला। उनके निर्भय, सत्यपूर्ण आचरण और नेतृत्व क्षमता से कौन परिचित नहीं है ? परन्तु स्वामी जी काँग्रेस में देर तक न रह सके क्योंकि आर्यसमाज के शुद्धि आन्दोलन को लेकर आपका

गांधीजी से मतभेद था, जिसके कारण आपने कांग्रेस छोड दी। इस विषय में आपकी पुस्तक **'इन साइड दी कांग्रेस'** देखने योग्य है। बहुत सारे लोग जिनकी प्राथमिकता राजनीति थी, वे कांग्रेस, प्रजा परिषद एवं अन्य तत्कालीन संगठनों में सम्मिलित हो गये। यहाँ से आर्यसमाज के संगठन को दो प्रकार से क्षति पहुँची, एक तो समाज के अच्छे कार्यकर्ता निकल गये जिसके कारण समाज के कार्यकर्त्ताओं का धीरे-धीरे अभाव होता गया। इसको संगठन ने कभी विचार का विषय नहीं बताया। परिणामस्वरूप जो पीढी आर्यसमाजी थी वह तो रही परन्तु अगली पीढी पर आर्यसमाज का प्रभाव कम होता गया क्योंकि आर्यसमाज का समाज के लोगों से सम्पर्क कम होता गया।

इस परिस्थिति का दूसरा प्रभाव यह हुआ, लोगों ने देखा समाज में जाने से आसानी से मंच मिलता है । समाज के पास संस्थायें, सम्पत्ति एवं समर्पित कार्यकर्त्ता हैं, उन्होंने इसके प्रजातन्त्रात्मक संविधान का लाभ उठाकर इसमें घुसना प्रारम्भ किया, यहाँ से समाज की धारा विपरीत दिशा में चलने लगी। इन लोगों की प्राथमिकता बदल गयी, ऐसी स्थिति में आर्यसमाज के अधिकारी अपने लाभ के लिए समाज का उपयोग करने लगे तथा दूसरे संगठनों ने भी अनुभव किया कि आर्यसमाज के पास भवन हैं, कार्यकर्त्ता हैं, विचारों की दृढता उतनी नहीं रही, अतः इन संस्थाओं का उपयोग किया जा सकता है। ऐसी संस्थाओं के लोग बडी संख्या में आर्यसमाजों के सदस्य बनकर उनपर अधिकार कर बैठे। जब विचार मुख्य नहीं रहा, सम्पत्ति और सत्ता ही समाज के नेताओं का लक्ष्य बन गया, तब झगडे, मुकद्दमे, पार्टीबाजी के अतिरिक्त और क्या हो सकता था? हानि तो सिद्धान्त की थी वह तो किसी के लिए चिन्ता का विषय नहीं था। राजनैतिक संगठनों ने भी इसका लाभ उठाने के लिए इनको टुकडा डाला और सारा समाज इन नेताओं के कारण उन संगठनों और पार्टियों का पिछलगू बन गया। इनमें पं.प्रकाशवीर शास्त्री, लाला राम गोपाल शालवाले, ओमप्रकाश त्यागी आदि अनेक नाम गिनाये जा सकते हैं जिनसे इन पार्टियों ने आर्यसमाज को अपने उपयोग में लिया, परन्तु समाज दुर्बल होता गया।

आर्यसमाज में जहाँ प्रचारकों, कार्यकर्त्ताओं का अभाव रहा वहाँ युवकों में कार्य करनेवाले आर्यवीर दल के संगठन को, इन नेताओं ने दूसरी पार्टियों और संगठनों के निर्देश पर लगभग समाप्त ही कर दिया। इस प्रकार इन नेताओं ने व्यक्तिगत लाभ तो प्राप्त कर लिया, परन्तु संगठन समाज से बाहर हो गया।

आर्यसमाज का उपयोग इन राजनैतिक पार्टियों ने भरपूर किया, ये चाहे कोई भी क्यों न हो, उस समय कांग्रेस, कम्युनिस्ट, समाजवादी, स्वतन्त्र हिन्दूसभा या जनसंघ। जो व्यक्ति आर्यसमाज में रहकर राजनैतिक महत्त्वाकांक्षा रखता है, वह स्वयं तो उन राजनैतिक दलों का पिछल्लग्गू बनता ही है, साथ में आर्यसमाज को अपने पीछे रखने का प्रयास करता है। परिणाम स्वरूप संगठन उस व्यक्ति की जेबी संस्था की तरह काम करता है। इसकी बडी हानि आर्यसमाज के संगठन के साथ-साथ देश की भी हुई। समाज में आदर्शवादी, चरित्रवान्, समाज-सुधार के लिए कटिबद्ध लोगों का अभाव हो गया। समाज में मूल्य और आदर्श का समाप्त होना समाज के पतन का परिचायक है, जो राजनैतिक गुलामी का कारण बनता है।

आर्यसमाज के पास स्थान-संस्थायें तो बहुत हो गयी, परन्तु विचारवान् कार्यकर्त्ता के अभाव में आर्यसमाज के पदाधिकारी, विद्यालयों-महाविद्यालयों के अध्यापक-आचार्य वे ही लोग बने, जो विचार शून्य तथा सैद्धान्तिक निष्ठा से रहित थे। आर्यवीर दल के समाप्त होने से आर्यसमाज में आनेवाले युवकों को सिद्धान्त एवं विचारों की जानकारी न मिलने के कारण, वे भी अन्य युवा संगठनों से जुड गये, वे आर्यसमाज के विरोधी बन गये और उन्होंने उन संगठनों को आर्यसमाज में प्रविष्ट करा दिया। परिणाम स्वरूप अनेक आर्यसमाज और उसकी संस्थाओं में इन्हीं संगठनों का कब्जा है। यह व्यक्ति की सामाजिक दुर्बलता होती है, जब वह स्वयं को सिद्धान्त से मुख्य मान लेता है, तब यही परिस्थिति पैदा होती है।

यह केवल आर्यसमाज के साथ ही नहीं है, अन्य संगठन भी इस तरह की पीडा को अनुभव करते हैं। मुनष्य सभी जगह समान प्रवृत्तियों के होते हैं । इस पीडा को जो समझते हैं, वे व्यक्त भी करते हैं। दिनांक ५ जनवरी २००४ के पंजाब केसरी में प्रसिद्ध लेखक और पांचजन्य के पूर्व सम्पादक भानुप्रताप शुक्ल ने अपने लेख में वर्तमान राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ और भारतीय जनता पार्टी के सम्बन्धों की चर्चा करते हुए लिखा - जो कहानी राजनैतिक पार्टियों ने आर्यसमाज के साथ दोहरायी, वही कहानी संघ और भाजपा के बीच चल रही है। आपने अपने इस लेख में इसको रेखांकित किया है कि कांग्रेस द्वारा आर्यसमाज को किस तरह से पंक्ति बाहर किया गया। समाज में राजनीति से सम्बद्ध लोग किस प्रकार समाज को हानि पहुँचाते रहे हैं और पहुँचा रहे हैं, यह यहां स्पष्ट है। इन लोगों ने राजनीति को प्रभावित नहीं किया अपितु उनकी राजनीति से समाज प्रभावित हो गया।

देश की सांस्कृतिक धारा का मलिन होना राष्ट्रीय संकट सूचक है। शासन भले ही राजनीति से संचालित होता हो, राष्ट्र-जीवन तो केवल सांस्कृतिक मूल्यों से ही सिंचित होता और सुरक्षित रहता है । सांस्कृतिक विरासत के बिना मनुष्य सिर्फ पशु होता है । राष्ट्र-शत्रु भौगोलिक सीमाओं पर प्रहार के साथ-साथ सांस्कृतिक मानबिन्दुओं पर भी प्रहार करते हैं। सभ्यताएं नष्ट की जाती हैं। राष्ट्रजन के मन में हीन भावनाएं भरी जाती है। परिणामस्वरूप वह राष्ट्र स्वत: गुलामी स्वीकार कर लेता है। भारत में इस प्रकार के एक नहीं अनेक उदाहरण हैं। हम अपनी राजनैतिक गुलामी का जुआ तभी उतार फैंकने में सफल हुए जब हमें अपनी सांस्कृतिक विरासतों का पुन: आत्मबोध हुआ। यदि सांस्कृतिक आंदोलन ऊर्जा प्रदान नहीं करता तो गुलाम भारत में राजनैतिक आजादी का आंदोलन कभी सफल नहीं होता। लोकमान्य तिलक ने आजादी के आंदोलन को श्रीगणेशोत्सव से जोडा था, तो गांधीजी का स्वराज का नारा रामराज्य और दयानन्द सरस्वती की मूल सोच की उपज था। केवल कांग्रेस को स्वतंत्रता संग्राम की लडाई लडने का श्रेय देनेवालों को यह कदापि नहीं भूलना चाहिए कि कांग्रेस की स्थापना से दस वर्ष पूर्व १८७५ में स्वामी दयानन्द सरस्वती ने आर्यसमाज की स्थापना करके आजादी की लडाई छेड दी थी। महात्मा गांधी के प्रादुर्भाव से पहले लाला लाजपत राय एक आर्यसमाजी के रूप में स्वतंत्रता आंदोलन का उद्‌घोष कर चुके थे। कांग्रेस ने आर्यसमाजियों के स्वतंत्रता संग्राम का अपहरण कर लिया था। भारत के पहले राष्ट्रपति डॉ.राजेन्द्र प्रसाद ने सार्वजनिक स्वीकारोक्ति की थी कि **'आर्यसमाज की भागिदारी के बिना देश आजाद नहीं कराया जा सकता था।'**

कांग्रेस ने एक सोची-समझी रणनीति के तहत आर्यसमाज के प्रभाव को खत्म करने का प्रयास किया। तात्कालिक लाभ और स्वयंभू नेता बनने की कांग्रेस नेताओं की ललक ने आर्यसमाजियों को हाशिए पर धकेल दिया। लाला लाजपत राय, बाल गंगाधर तिलक, विपिन चन्द्र पाल, चितरंजन दास और वीर सावरकर जैसे राष्ट्रवादी नेताओं की सांस्कृतिक राष्ट्रीय विचारधारा को तिरस्कृत करना शुरु कर दिया। इतिहास के विद्यार्थी जानते होंगे कि अपने जन्म के २५ वर्ष बाद तक कांग्रेस अंग्रेजों के कंधे से कंधा मिलाकर काम करती रही। सिर्फ आर्यसमाजी ही थे जिन्होंने अंग्रजों का सहयोग एकदम नकार दिया था और एक सत्यनिष्ठ सांस्कृतिक राष्ट्र के पुनरोदय का संघर्ष चलाया था। आर्यसमाज का चिंतन स्पष्ट था, 'हिन्दू समाज के विकार को दूर करके एक ऐसे

राष्ट्र का निर्माण किया जाए, जिसमें सभी को समान अधिकार मिलें। देश में मजहबी अल्पसंख्यकवाद की कोई जगह न हो। राष्ट्र के मूल नागरिक सत्ता-नियंता बनें और मजहबी संघर्ष को कोई बढ़ावा न मिल जाए।' आर्यसमाजी स्वतंत्रता आंदोलनकारियों की स्पष्ट राय थी कि अल्पसंख्यक साम्प्रदायिकता को सिर उठाने नहीं दिया जाना चाहिए।'

आर्यसमाजी संन्यासी, प्रचारक और नेता देश की स्वावलम्बी तथा स्वदेशी अर्थव्यवस्था के प्रबल समर्थक थे। आर्यसमाज से प्रेरणा लेकर गांधीजी ने स्वदेशी का नारा दिया। अंग्रेजों को यह नागवार गुजरा। उन्होंने लाला लाजपत राय जैसे नेताओं के बजाय नेहरू जैसों को बढ़ावा दिया। आर्यसमाज के सिद्धान्तों के विरुद्ध कांग्रेस ने मुस्लिम तुष्टीकरण का मार्ग पकडा।इस प्रकार राजनेताओं ने आर्यसमाज में घुसकर सिद्धान्त और संगठन को दुर्बल किया और अपना स्वार्थ सिद्ध किया परन्तु आज समाज की परिस्थिति को देखकर दुःखी होने की आवश्यकता नहीं, क्योंकि समाज की स्थापना जिन सिद्धान्तों और लक्ष्य को लेकर की गई थी आज भी उनमें उतनी ही नवीनता, सामयिकता और अनिवार्यता है। विचारों की दुर्बलता से यदि दुर्बलता आती तो चिन्ता की बात थी। दुर्बलता तो दुर्बल इच्छा शक्ति वाले लोगों के कारण आयी है। कारण को समझकर उसे दृढ इच्छा शक्तिवाले लोगों द्वारा दूर किया जा सकता है। ऐसा प्रयत्न करने की आवश्यकता है जिसके लिए शास्त्र में कहा गया है -

आस्ते भग आसीनस्योर्ध्वस्तिष्ठति तिष्ठतः।
शेते निषद्यमानस्य, चराति चरतो भगः।।
चरन् वै मधु विन्दति चरन् स्वादुमुदुम्बरम्।
सूर्यस्य पश्च श्रेमाणं यो न तन्द्रयते चरन्।।
चरैवेति, चरैवेति...!

(परोपकारी मासिक-फरवरी २००४ से साभार- सम्पादकीय)

आगामी संयुक्तांक होगा 'श्रद्धानंद गौरव विशेषांक'

वैदिक गर्जना के सुधी पाठकों से निवेदन है कि, समाजसेवी तपस्वी आर्य व्यक्तित्त्व पू.स्वामी श्रद्धानन्दजी (हरिश्चन्द्र गुरुजी) की जन्मशताब्दी के उपलक्ष्य में आगामी अप्रैल-मई २०१८ इन दो महिनों का एक संयुक्तांक **'श्रद्धानन्द गौरव विशेषांक'** के रुप में प्रसिद्ध होगा। पू. गुरुजी के सम्पर्क में आकर जिनका जीवन सुविकसित हुआ है, ऐसे शिष्यों व आर्य कार्यकर्ताओं से निवेदन है कि कृपया वे अपने लेख, संक्षिप्त संस्मरण या कविताएं शीघ्रतः (५ अप्रैल २०१८ तक) सभा कार्यालय के परली स्थित पते पर कोरियर या स्पीड पोस्ट से भेजें। अथवा श्री लिपी में टाईप कराकर nayankumaracharya222@gmail.com इस ई-मेल पर भेंजे।- सभामन्त्री

राम नवमी विशेष

श्रीराम गुण-गान

– कविवर श्री रामनरेश त्रिपाठी

सत्पुरुष-पुंगव, सत्यवादी, संयमी श्रीराम थे।
प्रतिभा-निदान, पराक्रमी धृतिशील, सद्गुणधाम थे।।
परम प्रतापी, प्रजारंजन, शत्रुविजयी वीर थे।
ज्ञानी, सदाचारी, सुधी, धर्मज्ञ, दानी, धीर थे।।
कल्याणकर उनके सभी शुभ लक्षणों को धार लो।
पढ मित्र पूर्ण पवित्र रामचरित्र जन्म सुधार लो।।१।।

श्रुति तत्त्व-वेत्ता सत्यसन्ध, कृतज्ञ, गौरववान् थे।
संसार के हित में सदा तत्पर महाविद्वान थे।।
निःस्पृह, प्रजा-प्रिय, नयनिपुण, अभिराम, अवगुणहीन थे।
आदर्श आर्य, उदार, करुणासिन्धु, शुचि, शालीन थे।।
वे सदा सर्वप्रकार से हैं पूजनीय विचार लो।
पढ मित्र पूर्ण पवित्र रामचरित्र जन्म सुधार लो।।२।।

श्रीराम ने जो कर दिखाया धर्म के विश्वास में।
ऐसा न अन्य उदाहरण है जगत् के इतिहास में।
दृढ हो उन्हीं के पुण्य-पथ पर चाहिए चलना हमें।
हम आर्य हिन्दू-मात्र रामचरित्र-कानन में रमें।
होगा इसी से देश का कल्याण सन्मति सार लो।
पढ मित्र पूर्ण पवित्र रामचरित्र जन्म सुधार लो।।३।।

उस सद्गुणी की जीवनी को लक्ष्य अपना मान लें।
आओ, सखे! सत्कर्म का संकल्प मन में ठान लें।।
श्रद्धा-सहित उस महात्मा का निरन्तर नाम लें।
इस लोक से उद्धार पाकर स्वर्ग में विश्राम लें।।
भ्रम-त्याग 'रामनरेश' उर में शक्ति-रश्मि पसार लो।
पढ मित्र पूर्ण पवित्र रामचरित्र जन्म सुधार लो।।४।।

* * *

महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा, आर्य समाज परली-वैजनाथ एवं पू.गुरुजी के शिष्यों की ओर से

असंख्य युवकों के नवनिर्माता व तपस्वी आर्य संन्यासी

पू.स्वामी श्रद्धानन्दजी (हरिश्चंद्र गुरुजी)

जन्मशताब्दी समारोह

दि.२८ व २९ अप्रैल २०१८ (शनि., रवि.)

स्थान : श्रद्धानंद गुरुकुल आश्रम, परली-वै. जि.बीड

* सस्नेह निमंत्रण *

राष्ट्र के उज्ज्वल भविष्य समझे जानेवाले विद्यार्थियों व युवकों के नवनिर्माण हेतु अपना सर्वस्व समर्पित करनेवाले महान् समाजसेवक, तपोमूर्ति, प्रेरक आर्य व्यक्तित्त्व **पूज्य स्वामी श्रद्धानन्दजी सरस्वती** (हरिश्चंद्रजी गुरुजी) इस वर्ष अपने यशस्वी जीवन के सौ वर्ष पूर्ण कर रहे हैं। इस उपलक्ष्य में पू.स्वामीजी के प्रेरक जीवन व कार्यों का समुचित गौरव हो, इस उद्देश्य से महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा, आर्य समाज परली-वैजनाथ एवं गुरुजी के शिष्यों की ओर से **'जन्मशताब्दी समारोह'** का आयोजन आगामी **दि.२८ व २९ अप्रैल २०१८ (शनिवार एवं रविवार)** को **श्रद्धांनद गुरुकुल आश्रम** परली-वै. में हो रहा है। इस समारोह में **स्वामीजी** के गौरव/सम्मान के साथ ही **विशेष यज्ञ, विभिन्न सम्मेलन, ग्रन्थ व विशेषांक विमोचन** आदि कार्यक्रम होंगें।

इस समारोह में निम्नलिखित विद्वान, शिक्षाविद्, ज्येष्ठ कर्मठ आर्य स्वाधीनता सैनिक तथा गुरुजी के शिष्य आमन्त्रित है।

* शिक्षाविद् डॉ. जनार्दनरावजी वाघमारे
* स्वा.सै.श्री बलिरामजी पाटील (निलंगेकर)
* स्वा.सै.आनन्दमुनिजी (चिल्ले अप्पा)
* श्री सोममुनिजी (कर्मठ वेद प्रचारक)
* डॉ.बी.एम. मेहेत्रे (प्रसिद्ध वैज्ञानिक)
* पं.प्रियदत्तजी शास्त्री (हैदराबाद)
* प्रो.ओमप्रकाशजी विद्यालंकार (होलीकर)
* पं.राजवीरजी शास्त्री (सोलापूर)
* पं.सुधाकरजी शास्त्री (पुणे)
* पं.प्रतापसिंहजी चौहान (उदगीर)

-० पू.गुरुजी (स्वामीजी) का प्रेरक जीवन ०-

महाराष्ट्र की पावन भूमि के मराठवाडा अंतर्गत औराद (ता.उमरगा जि.उस्मानाबाद) इस छोटेसे गांव में आज से से १०० वर्ष पूर्व सन् १९१७ को कार्तिकी पूर्णिमा के दिन सूर्यवंशी नामक मध्यम वर्गीय कृषक परिवार में गुरुजी का जन्म हुआ। सत्य के प्रति

उनकी अगाध श्रद्धा व निष्ठा के कारण वे आरम्भ से ही सत्पथ पर विराजमान हुए। छात्रावस्था में ही उन्हें श्री पालापुरे नामक एक किसान द्वारा महर्षि दयानन्द विरचित **'सत्यार्थ प्रकाश'** यह अमर ग्रन्थ प्राप्त हुआ, जिसके अध्ययन से उनमें सत्य वैदिक ज्ञान के प्रति लगाव हुआ और सारा जीवनही बदल गया। अपने जीवन का लक्ष्य निर्धारित करने हेतु वे प्रतिदिन ईश्वर का ध्यान व उपासना करते। फलस्वरूप परमात्मा द्वारा उन्हें 'समग्र जीवन विद्यार्थियों के नवनिर्माण हेतु व्यतीत करने' की अन्त:प्रेरणा हुई। इसे ईश्वर आज्ञा मानकर युवावस्था में उन्होंने अपना सारा जीवन नैष्ठिक ब्रह्मचारी रहकर बच्चों व विद्यार्थियों को सुसंस्कारित करने व उन्हें वेद का मानवीय विचार देने हेतु समर्पित करने की भीष्म प्रतिज्ञा की।

नानाविध कष्टों को सहते हुए स्कूल-कॉलेज तथा छात्रावास में पहुंचकर वे बुद्धिमान व सत्यान्वेषी विद्यार्थियों की तलाश कर उन्हें एक ईश्वर, एक मानव धर्म, एक मानवजाति, एकसमान उपासना पद्धति, राष्ट्रप्रेम, सामाजिक कर्तव्य, मांसाहार निषेध, अंधविश्वास व रुढी निषेध आदि विषयों पर मार्गदर्शन करते रहते। परिणामस्वरूप गुरुजी के इन उपदेशों को सुनकर छात्रों पर बहुत गहराई से प्रभाव पडता और उनमें परिवर्तन आता। छुट्टियों में अपने प्रिय शिष्यों को अपने गाँव घर बुलाकर महिनों तक अपने पास रखते। महाराष्ट्र के विभिन्न जिलों, प्रतिवर्ष छुट्टियों में विभिन्न स्थानों पर **'मानवता संस्कार शिविरों'** का आयोजन करते और वैदिक विद्वानों द्वारा मानवीय मूल्यों का छात्रों को प्रबोधन कराते। कभी भूखे-प्यासे रहकर, तो कभी चने खाकर गुजरान करते। सर्दी, गर्मी व वर्षा की परवाह न करते हुए अकेले ही जगह-जगह पैदल घुमना, तो कभी बस से यात्रा करना...! यह उनका दिनक्रम रहता। उनकी इस तपस्या के फलस्वरूप आज विभिन्न क्षेत्रों में कार्यरत हजारों विद्यार्थी वेद के सिद्धान्तों के अनुरूप निर्व्यसनी व सदाचारी बनकर मानवतावादी जीवन जी रहे हैं। सम्प्रति गुरुजी की तीन पीढियाँ अपने आदर्श जीवन व कार्य से समाज के लिए प्रेरणास्थान बन चुके हैं। अनेकों छात्रों को संस्कृत व वेद पढने हेतु उन्होंने उत्तर भारत के गुरुकुलों में भेजा।

पू.हरिश्चन्द्र गुरुजी ने सन १९९६ में आर्य जगत् के वीतराग सन्यासी स्वामी सर्वानन्दजी महाराज(दयानन्द मठ, दीनानगर-पंजाब) के करकमलों से सन्यास दीक्षा लेकर 'स्वामी श्रद्धानन्द' बनें। संन्यासी बनने के बाद गुरुजी ने महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि की कमान सम्भाली। उसके पूर्व भी आप सभा के मन्त्री रह चुके है। इस संगठन के प्रधान बनने के पश्चात् आर्यसमाज में नई जान आयी। आपके कुशल नेतृत्त्व ने तथा प्रिय शिष्य डॉ.सु.ब.काले(ब्रह्ममुनिजी) के मंत्रीकाल में सभा को आर्थिक दृष्टि से बलवती बनाकर वेदप्रचार कार्य में संलग्न है। पू.स्वामीजी ने मनुष्यकृत जातिव्यवस्था के निर्मूलन

हेतु अन्तर्जातीय विवाह कार्यक्रम भी चलाया। अपने अनेकों शिष्यों के अन्तर्जातीय विवाह कर जातिवाद की संकीर्णता को जड से उखाड फेंकने का आपका जो अभिनव प्रयत्न हुआ। महाराष्ट्र के वैदिक गुरुकुलीय शिक्षा पद्धति के बीजारोपण में स्वामीजी की अहम् भूमिका रही है। उस्मानाबाद के समीपस्थ गुरुकुल वेदश्री(एडसी) एवं परली स्थित आर्य समाज द्वारा संचालित श्रद्धानन्द गुरुकुल इसके उदाहरण हैं। परली गुरुकुल के लिए आपने अपने प्रिय शिष्य श्री शिवमुनिजी(मयाचारी गुरुजी) को आचार्य बनाकर आप इसके मुख्य अधिष्ठाता बन गए। स्वामीजी ने हैदराबाद स्वतन्त्रता संग्राम में भी भूमिगत रहकर कार्य किया है। साथ ही हिन्दी रक्षा आन्दोलन, गोवा मुक्ति संग्राम में भी आप उत्साह के साथ सम्मिलित हुए। इस तरह प्रखर राष्ट्रभक्त के रूप में उनका व्यक्तित्त्व सभी के लिए प्रेरणास्त्रोत है। उनके इन महनीय कार्यों को देखते हुए उन्हें कई पुरस्कार भी मिले हैं।

स्वामीजी ने इतना महान कार्य किया, किन्तु वे सदैव प्रसिद्धीपरान्मुख रहे । कभी भी किसी पद या मानसम्मान की अपेक्षा नहीं की। सदैव परोपकारी भावना के साथ जीते रहे। आज इस तरह का तपस्वी व्यक्तित्त्व मिलना बहुत कठिन है, जो कि एक घूमता-फिरता प्रचारक व त्याग से ओतप्रोत हो! ऐसे महान तपोनिष्ठ व्यक्तित्त्व का सम्मान व गौरव करना यह हम सब शिष्यों व आर्यों का परमकर्तव्य है। स्वामीजी के सौ वे वर्ष में होने जा रहा यह **'शताब्दी समारोह'** एक तरह से उनका जीवित श्राद्ध ही है। ऐसे हम सबके आदर्श प्रेरणास्त्रोत पिता, गुरुदेव, पितामह, आचार्य के ऋणों से मुक्त होने के उद्देश्य से आयोजित इस **जन्मशताब्दी समारोह** को सफल बनाने हेतु कृतसंकल्पित होवें।

अत: आप सभी से नम्र निवेदन है कि इस समारोह में अधिक से अधिक संख्या में सपरिवार उपस्थित रहकर कार्यक्रमों को सफल बनायें और पूर्णत: आर्थिक सहयोग देने की कृपा करें। समारोह के आयोजन हेतु आप सभी महानुभाव अपनी सहयोग धनराशियाँ सभा के परली-वैजनाथ स्थित भारतीय स्टैट बैंक के खाता क्र.**11154152843** (आय.एफ.एस.सी. कोड क्र.**SBIN0003406**)में भेजकर आर्थिक सहयोग करें। साथ ही समारोह की सफलता के लिए सेवाएँ देने का कष्ट करें।

-० विनीत ०-

डॉ.ब्रह्ममुनि (प्रधान)   माधव देशपांडे(मंत्री)   उग्रसेन राठौर (कोषाध्यक्ष)

तथा सभी पदाधिकारी, महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा, परली-वैजनाथ

जुगलकिशोर लोहिया(प्रधान), उग्रसेन राठौर(मन्त्री), देविदास कावरे(कोषाध्यक्ष)

आर्यसमाज परली-वैजनाथ जि.बीड तथा

पू.स्वामीजी (गुरुजी) के सभी शिष्यगण

छपते-छपते अत्यंत महत्त्वपूर्ण...

आर्यजनों तथा गुरुजी के शिष्यों को विदित कराया जाता है कि, किन्हीं कारणों से पू.स्वामी श्रद्धानन्दजी(हरिश्चंद्र गुरुजी) का **जन्मशताब्दी समारोह** अब तीन दिन के स्थान पर दो दिन ही मनाया जा रहा है। तदनुसार प्रस्तुत कार्यक्रम केवल **दिनांक २८ व २९ अप्रैल २०१८(शनिवार एवं रविवार)को स्वामी श्रद्धानंद गुरुकुल आश्रम, नंदागौल मार्ग(वैद्यनाथ मंदिर के पीछे), परली-वैजनाथ** में सम्पन्न होगा।

कृपया यह सूचना सभी तक पहुंचाये तथा समारोह में अधिक से अधिक संख्या में पधारे ।

- शताब्दी आयोजन समिति

परली में आयोजित स्वामी श्रद्धानंद (गुरुजी) के जन्म शतावदी समारोह में प्रकाशित होनेवाले

✻ महत्त्वपूर्ण ग्रंथ ✻

- **वैदिक विद्वान् डॉ.सुरेन्द्रकुमारजी द्वारा संशोधित 'विशुद्ध मनुस्मृति' का अनूदित मराठी ग्रंथ**
  अनुवादकर्ता-प्राचार्य घनःश्याम मैंदरकर(धाराशीव)
  संपादक - ज्ञानकुमार आर्य, प्रा.ओमप्रकाश होलीकर
- **दिवंगत वेदप्रचारक पू.स्वामी संकल्पानंदजी सरस्वती द्वारा लिखित विभिन्न मौलिक ट्रैक्टो का 'लघु ग्रन्थसंग्रह'**
  संपादक - ज्ञानकुमार आर्य/प्रा.ओमप्रकाश होलीकर
- **वैदिक विद्वान प्रो.डॉ.रघुवीरजी वेदालंकार लिखित ग्रंथ 'महर्षि दयानंद सूक्ति संग्रह'**
- डॉ.ब्रह्ममुनिजी द्वारा लिखित हिंदी ग्रंथ **'मांसाहार क्यों नहीं?'**
- डॉ.नयनकुमार आचार्य द्वारा लिखित ग्रंथ **'वेदों में मानवीय मूल्य'**
- वैदिक गर्जना का **'पू.स्वामी श्रद्धानन्दजी (गुरुजी)गौरव विशेषांक'**
- वैदिक गर्जना का **'स्व.पं.विश्वमित्रजी शास्त्री स्मृति विशेषांक'**

***

॥ओ३म्॥

माझा मराठाची बोलु कवतिके । परि अमृतातेही पैजेसीं जींके ।
ऐसी अक्षरेंचि रसिकें । मेळवीन ॥ (संत ज्ञानेश्वर)

मराठी विभाग

उपनिषद संदेश आत्मज्ञानी दुर्लभच...!

श्रवणायापि बहुभिर्यो न लभ्यः श्रृण्वन्तोऽपि बहवो यन्न विद्युः।
आश्चर्योऽस्य वक्ता कुशलोऽस्य लब्धाऽऽश्चर्यो ज्ञाता कुशलानुशिष्टः॥

हे जे आत्मज्ञान आहे, ते अनेक मानवांकडून ऐकण्यास सुद्धा मिळत नाही. म्हणजेच सांसारिक कार्याधिक्यामुळे किंवा माया-मोहात गुरफटल्याने माणूस ऐकू शकत नाही. अनेक जण असे आहे की, हे आत्मज्ञान ऐकून देखील समजू शकत नाहीत. कारण आत्मज्ञानावर बोलणारा व्याख्याता मात्र एखादा दुर्लभच (आश्चर्यकारक) असतो. तसेच हे आत्मज्ञान प्राप्त करणारा कुशल असा विवेकीसुद्धा एखादाच सापडतो. त्याचबरोबर सुयोग्य अशा ब्रह्मज्ञानी आचार्यांकडून उपदेश ग्रहण केलेला ज्ञानी देखील एखादाच (अद्‌भुत स्वरुपी) सापडतो.

म्हणजेच आत्मज्ञानाचे अधिकारी, व्याख्याते, ज्ञाते व अनुभवकर्ते फारच दुर्लभ(आश्चर्यकारी) असतात. **(कठोपनिषद-२/७)**

दयानंद वाणी आर्य समाज रुपी बागेचा मी तर माळी...

'मी आर्य समाजरुपी एक उद्यान लावले आहे. यामुळे माझी अवस्था बागकाम करणाऱ्या माळ्यासारखी आहे. बागेतील झाडांना खत, माती टाकतांना, राख आणि माती माळ्याच्या डोक्यावर, अंगावर पडतच असते. माझ्यावर राख आणि धूळ कितीही पडो, मला त्याचं काहीही वाटत नाही. परंतु ही वाटिका, आर्य समाजरूपी हे उद्यान, नेहमी हिरवेगार राहो, निर्विघ्नपणे फळो आणि फुलो हीच अपेक्षा आहे.'

*** एक इशारा** - 'आर्यसमाजीयांनो! तुमच्या कर्तव्यजागृतीने, शेष भरतखंडात-विशेषतः हिंदू समाजात जे इष्टप्रद असे सामाजिक, धार्मिक नवजीवन आले आहे, त्याबद्दल योग्य तो अभिमान बाळगा, परंतु त्याबरोबर अखिल भूमंडलावर वैदिकधर्म साम्राज्य प्रसृत करण्याची जी अत्यंत महत्वाची पुण्यप्रद जबाबदारी तुमच्यावर आहे, ती क्षणभरही डोळ्याआड न करता निर्लेपपणे, निरहंकार वृत्तीने बजावीत चला.'

आर्य समाज : काल-आज आणि उद्या

- प्राचार्य देवदत्त तुंगार

आधुनिक काळातील महर्षी स्वामी दयानंद सरस्वती (जन्म इ.स.१८२४ देहावसान इ.स.१८८३) यांनी मुंबई येथे (गिरगाव काकडवाडी) दि.१० एप्रिल १८७५ रोजी आर्यसमाज या धार्मिक, सामाजिक, सांस्कृतिक संस्थेची स्थापना केली. आर्य समाज या समाजप्रबोधन करणाऱ्या परिवर्तनवादी संघटनेच्या स्थापना दिवस व महाशिवरात्र म्हणजे ऋषिबोधोत्सव हे दोन दिवस विशेष पर्व म्हणजे गावोगावी विशेष उत्साहाने साजरे केले जातात. महाशिवरात्रीच्या दिवशी बालक मूलशंकर(म्हणजेच नंतरचे स्वामी दयानंद) यांचा गुजरातमधील शिवमंदिरात शिवपिंडीवर उंदीर खेळतांना पाहून मूर्तिपूजेवरचा विश्वास उडाला. त्यामुळे त्यांनी खरा 'शिव' शोधण्यासाठी गृहत्याग केला. भारतातील तत्कालीन साधुसंतांच्या आणि आध्यात्मिक पुरुषांच्या भेटी घेतल्या. पण त्यांचे समाधान झाले नाही. शेवटी मथुरा येथे तत्कालीन व्याकरण सूर्य प्रज्ञाचक्षू स्वामी विरजानंद यांच्या चरणी ते विसावले. तेथे राहून त्यांनी तीन वर्षे कठोर वेदाध्ययन व सखोल व्यासंग केला. गुरुंच्या सान्निध्यात राहून मिळविलेले गर्हिरे वैदिक तत्त्वज्ञान सर्व जगाला देण्यासाठी त्यांनी आर्यसमाज या संस्थेची स्थापना केली. यंदा भारतीय तिथीप्रमाणे चैत्र शुद्ध प्रतिपदा विक्रम संवत् २०७५ म्हणजेच इ.स.१८ एप्रिल २०१८ ला आर्यसमाजाचा १४४वा वर्धापनदिन साजरा होत आहे. त्यानिमित्ताने आर्यसमाजाचा इतिहास, वर्तमान स्थिती व भवितव्य यांचा संक्षेपाने घेतलेला हा आढावा आपणासमोर सादर करीत आहे.

गौरवशाली पूर्वेतिहास :

एकोणिसाव्या शतकात सत्यशोधक समाज(स्थापना १८७३) आणि आर्यसमाज (स्थापना १८७५) या दोन संस्थांनी महाराष्ट्रात व भारतात समाज प्रबोधन व समाज परिवर्तनाचे काम महात्मा फुले व स्वामी दयानंद यांच्या प्रेरणादायी विचारधारेने केले आहे. सत्यशोधक समाजाचे कार्यक्षेत्र महाराष्ट्रापुरते सीमित राहिले व नंतर तो 'सत्ताशोधक समाज' बनला. आर्यसमाजाचे प्रचार माध्यम हिन्दी (राष्ट्रभाषा-जनभाषा) असल्यामुळे तो लाहोर, पंजाब, उत्तरप्रदेश आदी भागात जोमाने वाढला. देश विदेशात त्यांच्या कार्यशाखा विस्तारल्या. भारतीय स्वातंत्र्य लढ्यात जे सैनिक तळहाती शिर घेऊन प्राणपणाने लढले. त्यापैकी जवळपास ८० टक्के कार्यकर्ते,

नेते हे आर्यसमाजाच्या संस्कारात, आर्य समाजांनी चालविलेल्या शिक्षण संस्थांमधून घडलेले होते. याची नोंद भारतीय राष्ट्रीय कॉंग्रेसच्या इतिहासात लेखक श्री पट्टाभिसीतारामय्या यांनी कृतज्ञतापूर्वक केली आहे. मात्र महात्मा ज्योतिबा फुले व स्वामी दयानंद सरस्वती या दोन महापुरुषांच्या आधी सुधारकाग्रणी राजा राममोहनरॉय यांनी भारतात अनेक सामाजिक सुधारणांचा सूत्रपात 'ब्राह्मो समाजा'च्या माध्यमातून केला. त्यांनी पहिले मोठे समाज सुधारक मानले जाते. १८२९ साली लॉर्ड बेंटिंग यांच्या मदतीने भारतातील धर्माच्या नावाखाली चालू असलेली अघोरी क्रूर सतीप्रथा त्यांनीच कायद्याने बंद केली. 'समाज विघातक रूढी आणि परंपरा धर्माच्या नावाने चालविता येणार नाहीत. त्या कायद्याने बंद करण्याचा (सेक्युलर) अधिकार सरकारला आहे', हे राजा राम मोहनराय यांनीच सिद्ध केले.

आर्यसमाजाची कामगिरी :

सतीप्रथा बंद करणे, स्त्री शूद्रांना वेदांचा म्हणजेच ज्ञानसंपादनाचा अधिकार आहे, जाती प्रथा अनिष्ट असून आंतरजातीय विवाहांना आणि विधवा-विवाहांना मान्यता व प्रोत्साहन देणे, विद्यालये गुरुकुले स्थापून कथित शूद्रांना व मुलींना शिक्षणाची कवाडे खुली करणे, अंध:श्रद्धा निर्मूलन करणे, विवेकनिष्ठ विज्ञानवादी दृष्टिकोन समाजाने अंगिकारावा यांसाठी अनेक सुधारणावादी पंथांनी व संप्रदायांनी प्रयत्न केले. पण याबाबतील भरीव कामगिरी आर्य समाजाचीच आहे, हे मान्य करावे लागेल. या उदारमतवादी व आधुनिक विचारांमुळेच महात्मा फुले न्यायमूर्ती रानडे प्रभृतींनी स्वामी दयानंदांची पुणे येथे भिडे वाड्यात प्रवचने आयोजित केली आणि त्यांची हत्तीवरून प्रचंड मिरवणुक काढली. मिरवणुकीत सनातनी ब्राह्मणांनी अडथळे आणण्याचा प्रयत्न केला. सूज्ञ न्यायमूर्ती रानडे यांच्यावर मिरवणुकीत चिखलफेक झाली. आचार्य अत्रे यांच्या महात्मा फुले चित्रपटाने हा प्रसंग चित्रित करण्यात आला आहे.

लोकहितवादी व दयानंद :

पुणे आर्यसमाज शाखेची जबाबदारी खुद्द न्यायमूर्ती रानडे यांनीच स्वामी दयानंदांच्या इच्छेनुसार स्वीकारली. रानडे यांच्या सुविद्य प्रत्नी रमाबाई यांनी लिहिलेल्या 'आठवणी' मध्ये स्वामी दयानंदांचे उल्लेख आहेत. स्वामी दयानंदांचा घनिष्ट संबंध न्यायाधीश गोपाळ हरि देशमुख यांच्याशी आला. महाराष्ट्रातील 'शतपत्रे' लिहिणारे लोकहितवादी मासिकाचे संपादक गोपाल हरि देशमुख (ते लोकहितवादी या नावानेच प्रसिद्ध) यांनी महर्षी दयानंदांशी संवाद साधतांना 'आपण आधुनिक काळातील

‘कपील’, **‘कणाद’ सारखे महान ऋषी आहात!’** असे सांगितले. त्यावर महर्षी दयानंदास म्हणाले, **‘ऋषीमुनींच्या पायाच्या धुळीकणाइतकाही मी नाही.’** स्वामीजींची केवढी ही नम्रता! ते लोकहितवादींनी म्हटल्याप्रमाणे खरोखर ऋषीमुनीच होते. जानेवारी १८८४ ला ‘लोकहितवादी’ यांचा **‘दयानंद श्रद्धांजली’** अंक संग्राह्य आहे. त्याचे पुनर्प्रकाशन नांदेडच्या वैदिक सेवाश्रम मासिकातर्फे आम्ही केले. त्यानंतर पुणे येथील डॉ.मा.प.मंगुडकर यांनी विवेचक प्रस्तावना लिहून हा ग्रंथ चांगल्या प्रकारे प्रकाशित केला. त्यात लेखकाचा आवर्जुन उल्लेख केला आहे.

स्वातंत्र्य आंदोलन व आर्यसमाज :

आर्यसमाज हा ज्वलंत राष्ट्रभक्त स्वदेशीचा सक्रिय पुरस्कार करणारी संस्था असल्याने भारताच्या स्वातंत्र्य लढ्यात काँग्रेसच्या बरोबरीने भाग घेतला. गांधी युगाच्या आधी टिळक युगात **‘लाल बाल पाल’** ही त्रिमूर्ती स्वातंत्र्य लढ्याची धुरा वहात होती. या त्रिमुर्तीतील लाल म्हणजे पंजाबचे लाला लाजपतराय. ते आर्यसमाजाचे महान नेते होते. आर्यसमाज ही त्यांचा इंग्रजीतील ग्रंथ अत्यंत प्रसिद्ध असून **‘आर्यसमाज ही माझी माता आहे, तर स्वामी दयानंद मला पितृस्थानी आहेत’**, असे लालाजी नेहमी काँग्रेसच्या आणि आर्यसमाजाच्या सभा संमेलनात सांगत असत. त्यांच्यावर निर्घृण लाठीहल्ला करणाऱ्या सँडर्सची आर्यसमाजी तरुणाने हत्या करून मृत्यूचा सूड उगविला. स्वामी श्रद्धानंद हे खरेखुरे दलितोद्धारक आर्यसमाजी नेते होते. पंजाबमध्ये काँग्रेसचे अधिवेशन घेण्यासाठी कोणी पुढे येत नव्हते. तेंव्हा स्वामी श्रद्धानंदच काँग्रेस अधिवेशनाचे स्वागताध्यक्ष झाले व अधिवेशन यशस्वी केले. त्यांनीच त्यांच्या हरिद्वार येथील गुरुकुलामध्ये बॅरिस्टर गांधींना **‘महात्मा’** ही पदवी दिली. डॉ.बाबासाहेबांनी इतर कोणत्याही काँग्रेस नेत्यासाठी कधी श्रद्धांजली सभा घेतली नाही. फक्त स्वामी श्रद्धानंदांसाठी बाबासाहेबांनी श्रद्धांजली सभा घेतली आणि दलितांच्या उद्धाराची खरी तळमळ श्रद्धानंदांनाच असे त्यांनी नमूद केले आहे. एका माथेफिरू मुस्लीमाने श्रद्धानंद रुग्णशय्येवर असतांना त्यांच्याशी चर्चा करण्याचे कारण सांगून त्यांना अगदी जवळून गोळ्या घातल्या व श्रद्धानंद धारातीर्थी पडले. थोर क्रांतिकारक व श्रद्धानंदांच्या शुद्धी आंदोलनाचे समर्थक स्वातंत्र्यवीर सावरकर यांनी त्यांच्या स्मरणार्थ **‘श्रद्धानंद’** नावाचे मासिक काढले. वीर सावरकरांची जगभर गाजलेली ‘माझी जन्मठेप’ श्रद्धानंद मासिकातच लेखमालेच्या रूपात आधी प्रसिद्ध झाली व नंतर त्यांचे पुस्तक झाले.

आर्यसमाजाचा 'काल' सुवर्ण अक्षरात लिहून ठेवण्यासारखा आहे. 'आधी राजकीय स्वातंत्र्य की आधी सामाजिक सुधारणा' हा टिळक-आगरकरांचा वाद प्रसिद्ध आहे. आर्यसमाजाने स्वातंत्र्य आणि सुधारणा यात समन्वय करून एक समयावच्छेदे दोन्ही आघाड्यावर प्रखर लढा दिला. आर्यसमाजाची स्थापना महाराष्ट्रात झाली असली तरी तो फोफावला अखंड पंजाब व उत्तर भारतातच ! महाराष्ट्रात कोल्हापूरचे छत्रपती शाहू महाराज हे कट्टर वेदाभिमानी आर्यसमाजी प्रारंभापासूनच होते. पण कोल्हापूर येथे १ जानेवारी १९१८ रोजी आर्यसमाजाची रितसर स्थापना झाली व शाहू महाराज अध्यक्ष आणि माझे वडील हरि सखाराम तुंगार सचिव झाले. महाराजांच्या सूचनेने व आर्थिक मदतीने ह.स.तुंगार यांनी सुमारे ३०० पानाचे **'महर्षी दयानंद सरस्वती यांचे चरित्र कामगिरी'** हे मराठीतील दयानंदांचे पहिले चरित्र १९२० साली प्रसिद्ध केले. स्वामी दयानंद यांच्या **'सत्यार्थ प्रकाश'** चाही त्यांनी अनुवाद केला. अहमदनगर व कोल्हापूर येथून आर्यभानुचे संपादन केले. नांदेड आर्यसमाजाच्या सहकार्याने शिवराम जिंदम, खुशालभाई राठोड प्रभृतींच्या सहकार्याने नांदेड येथून इंदिरा प्रेस मोंढा येथून **'आर्यभास्कर'** हे १९६१ ते १९६६ साप्ताहिक ह.स. तुंगारांनी संपादित केले. लक्ष्मणराव ओघले, बी.ए.नारकर, स्वामी मेधाव्रतजी (येवला, नासिक), प्रज्ञादेवी गणपतराव खत्री, छगनलाल शर्मा, कश्यप आदींबरोबर तुंगारांनी छोटे-छोटे ३० ट्रॅक्ट व **'आर्य धर्मेंद्र दयानंद'** अशी पुस्तकेही लिहिली आहेत.

आर्यसमाजाचा भूतकाळ उज्ज्वल आहे व वर्तमानकाळात इतर परिवर्तनवादी सुधारक चळवळी प्रमाणे आज आर्यसमाजातही शिथिलता आहे. शंभरी ओलांडलेले स्वामी श्रद्धानंदजी(हरिश्चंद्र गुरुजी) शंभरीच्या घरात असलेल्या श्रीमती राधाबाई शिवरामजी जिंदम प्रेरणा देत आहेत. पण दिल्लीपासून गल्लीपर्यंत नेत्यांमध्ये सत्तास्पर्धा आहे. दिल्लीत दोन-तीन सार्वदेशिक सभा आहेत. आपसातील भांडणे तीव्र आहेत. प्रा.वेदकुमार वेदालंकार(वेदमुनी), डॉ.ब्रह्ममुनी, प्रा.ओमप्रकाश होळीकर, कुलगुरु डॉ.जनार्दन वाघमारे, प्रा.देवदत्त तुंगार, पाराशर, परांडेकर, चंद्रशेखर लोखंडे व इतर लहान मोठे कार्यकर्ते धडपड करतात, पण एकंदर तरुणांची शक्ती आर्यसमाजात आज दिसत नाही. आमच्यासारखी ज्येष्ठ मंडळी कांहीच महत्त्व नसलेली पदे अडवून बसली आहेत. तरुणांना आम्ही वाव देत नाही व तेही आमच्याकडे फिरकत नाहीत असे हे दुष्टचक्र आहे. आर्यसमाजाचे सुधारणावादी कार्यक्रम इतर संस्थांनी

स्वीकारले आहेत. आंतरजातीय विवाह चळवळ थोडीफार चालू आहे. शालेय व महाविद्यालयीन विद्यार्थी आणि शिक्षकात प्रचार-प्रसार करण्याच्या आमच्या कांही योजना आहेत. यादृष्टीने आर्यसमाजांचे नेतृत्व करणारी महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधी सभा अतिशय सक्रियपणे प्रयत्नशील आहे.

नवीन पिढीला रुचेल-पचेल असे समाजहितकारक उपक्रम आणि कार्यक्रम नेटाने पार पाडले, तर भूतकाळाप्रमाणे आर्यसमाजाचा भविष्यकाळही दैदीप्यमान होऊ शकतो. आशावाद बाळगणेच आपल्या हातात आहे.

(लेखक म.आ.प्र.सभेचे उपमंत्री आहेत.)

- कलामंदिरमागे, सोमेश कॉलनी,
नांदेड मो.९३७२५४१७७७

महती यज्ञाची, हमी शाश्वत सुखाची...!

- सौ.सुभद्रा मारुतीराव घोरपडे(निवृत्त शिक्षिका)

काव्यसुधा

उठा मानवांनो ! हवन करा, वैदिक प्रणालीचा प्रसार करा
अशुद्ध हवा-पाणी शुद्ध करा, प्रदूषण-अवर्षण दूर करा....।।धृ।।

ऋषि-मुनी-पूर्वज रोज हवन करत होते
शुद्ध पाण्याची भरपूर वृष्टी होत असे,
तळ्याचे, विहीरीचे, झऱ्याचे शुद्ध पाणी प्यायला
पाहिजे तेंव्हा सर्वत्र निरोगी, रुचकर फळे चाखायला
गतकाळाच्या भरभराटीची गोड आठवण करा...।।१।।

धन-धान्याची देशात समृद्धी होती
परक्या देशाची इकडे बारीक नजर होती
देशातून सर्वत्र सोन्याचा धूर निघत होता
विदेशी या देशात घुसण्याचा प्रयत्न करीत होता
शुद्ध हवा, पाणी, संपत्तीचा मोह होता सारा....।।२।।

परकीय आले संस्कृतीचे पतन सुरु झाले
ऋषि-मुनी, ज्ञान, आश्रम, हवन कमी होत गेले
मूर्तिपूजा, पादपूजा, अंधश्रद्धा याला उत आले
देशामध्ये जातीवाद, धर्मवाद, ईश्वरवाद सुरु झाले
हवन सोडून मानवाने मांडला अभिषेक, पोटपूजेचा पसारा...।।३।।

हवनातील शुद्ध वायू हवेत मिसळता
सर्व प्राणिमात्रास तो यथायोग्य मिळतो
भेदभाव नाही, राव-रंक नाही, लाभ सर्वांना मिळतो
खाण्यापेक्षा वायूरूप तूप अधिक क्रियाशील ठरतो
भौतिक सुखासाठी प्रदूषित तत्त्वांचा धिक्कार करा....।।४।।

भोपाळमध्ये वायू गळतीने प्राणहानी झाली, अपंग झाले
रोज हवन करणारे वायू गळतीतही सुखरूप राहिले
शुद्ध हवेची झाडासाठी, झाडाची पावसासाठी मदत होते
पिण्यासाठी पाणी, धान्यासाठी पाणी पावसाचेच मिळते
सुदृढ आरोग्यासाठी निरोगी मूलभूत गरजेचा विचार करा....।।५।।

मूलभूत गरजा संकटात सापडल्या
आपल्याच चुकीमुळे त्या दुषित झाल्या
खारीचा वाटा उचलून संकल्प करू या
घरोघरी हवन करु, झाडे लावू-जगवू या
भावी महासंकटांना मिळू द्यायचा नाही थारा
मानवतेच्या कल्याणाचा हाच खरा नारा....।।६।।

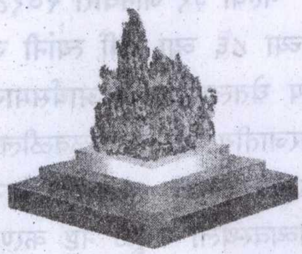

- लक्ष्मी कॉलनी, कालिदादेवी मंदिरजवळ,
जुना औसा रोड, लातूर. मो.८१४९४९८०१७

'कन्या संस्कार शिबिर' औरंगाबादेत

प्रान्तीय सभेच्या मार्गदर्शनाखाली आर्य समाज, गारखेडा औरंगाबाद तर्फे येत्या २ ते १० मे २०१८ या कालावधीत 'आर्य कन्या संस्कार शिबिरा'चे आयोजन होत आहे. याकरिता मार्गदर्शक म्हणून श्री धर्मवीर आर्य(दिल्ली) व त्यांच्या शिष्या येत आहेत. औरंगाबादेत होणाऱ्या या शिबिराचे स्थळ थोड्याच दिवसात निश्चित होईल. तरी ८वी ते पदवीपर्यंत शिक्षण घेत असलेल्या मुलींनी आपल्या शारीरिक, मानसिक, बौद्धिक, सामाजिक व आत्मिक विकासासाठी या शिबिरात सहभागी व्हावे आणि प्रवेश शुल्क व इतर माहितीसाठी शिबिर संयोजक डॉ.लक्ष्मण माने (९२२५१११५३) यांचेशी संपर्क करावा, असे सभेने कळविले आहे.

वात्सल्यमूर्ती माता त्रिवेणीबाई लोखंडे

– प्रशांतकुमार शास्त्री

आर्य समाजाच्या प्रचार व प्रसार क्षेत्रात मोलाची भूमिका बजावणाऱ्या अनेक स्त्रियांची महती मोठ्या गौरवाने गायली जाते. जीवनाचा अतिशय खडतर प्रवास करीत आपल्या पतीदेवांच्या कार्यात मोठे योगदान देणाऱ्या माता त्रिवेणीबाई रामस्वरूप लोखंडे या एक होत.

गेल्या ३१ जानेवारी २०१८ रोजी वयाच्या ८६ व्या वर्षी त्यांनी जगाचा निरोप घेतला आणि आर्यसमाजाच्या आंतरजातीय विवाह चळवळीला एक मोठा धक्काच बसला. जन्मगत जातीव्यवस्थेला समूळ नष्ट करण्याच्या कामी त्रिवेणीबाईंनी दिलेले योगदान सर्वांच्या स्मरणात राहिल.

तसा मी त्यांच्या परिवारातील जणू एक सदस्यच! लहापणापासूनच मला त्यांची मातृछाया लाभली. प्रेमाने आम्ही सर्वजण त्यांना 'आई' या नावानेच संबोधतो. मृत्युच्या दोन दिवस अगोदर मी त्यांना भेटण्यासाठी गेलो असता त्यांच्या प्रकृतीची आस्थेवाईकपणे विचारपूस केली आणि तिळगूळ घेऊन आशीर्वाद घेतला. तसे त्यांचे आरोग्य या वाढत्या वयात देखील ठणठणीतच होते. मी एकटाच आल्याचे पाहुन त्यांनी मला 'पत्नीसह का आला नाहीस?' या विचारलेल्या प्रश्नातून त्यांची आमच्याविषयीची मातृभावना दृष्टीस पडली. दुर्दैवाने त्यानंतर दोन दिवसातच त्यांनी जगाचा निरोप घेतला.

लोखंडे परिवार लातूर जिल्ह्यातील रेणापुर या गावचा! याच गावातून स्मृतिशेष रामस्वरुपजी लोखंडे बंधू, माणिकरावजी भोसले, राऊत इत्यादींमुळे आंतरजातीय विवाह चळवळ उदयास आली. या मंडळींनी आपल्याच मुला-मुलींच्या विवाहापासून जातीअंताच्या लढ्याचा श्रीगणेशा केला होता. रेणापूर हे माझे आजोळ! यामुळे शिक्षणाच्या निमित्ताने मामा श्री वैजनाथराव बंडे (वैद्यमुनी) यांच्याकडे नेहमीच अगदी लहानपणा पासूनच इथे येण्याचे भाग्य लाभले. मामा व स्व.रामस्वरूप लोखंडे हे एकमेकांचे घनिष्ट मित्र असल्याने लोखंडे परिवारात माझाही वावर होता. जेमतेम सहावी-सातवीत शिकत असतांना लोखंडे यांच्या ज्येष्ठ कन्या इंदुमतीचे लग्न झाले होते. तेंव्हा ज्येष्ठ बंधू श्री चंद्रशेखरजी गुरुकुलचे शिक्षण घेऊन परतले होते. हे दोन्ही बंधू, विद्याताई, कांताताई, सुशीलाताई, श्री अनंत या सर्वांशी माझे बंधू-भगिनीचे नाते जडले. त्याच काळात श्री धर्मदीपजी कोणालाही

न कळू देताच गुरुकुलीय शिक्षणासाठी घटकेश्वर (हैद्राबाद)ला निघून गेले. त्यावेळी माता त्रिवेणीबाईंचे मातृह्रदय अतिशय दुःखी बनले. आईचे आपल्या मुलावर किती जीवापाड प्रेम असते? हे तेंव्हा मला अनुभवता आले.

नंतर स्व.श्री रामस्वरुपजींच्या प्रेरणेने मी व धर्मदीपजी गुरुकुलीय शिक्षणासाठी बहालगढ(सोनीपत-हरियाणा) येथील पाणिनी महाविद्यालयात प्रविष्ट झालो. तिथे पं.युधिष्ठिरजी मीमांसक व आचार्य विजयपालजी यांचे शिष्यत्व पत्करून तीन वर्षापर्यंत संस्कृत व्याकरण शास्त्राचे अध्ययन केले. शिक्षणानंतर धर्मदीपजी लातूरला आले व त्यांनी पत्रकारितेला प्रारंभ केला. अत्यंत हालाखीच्या परिस्थितीत त्यांनी 'रेणातीर समाचार' हे दैनिक चालविले. 'मोडेल पण वाकणार नाही' हा धाडसीबाणा अंगिकारून त्यांनी वृत्रपत्रीय व्यवसाय केला. पण दुर्दैवाने तो दीर्घकाळ चालू शकला नाही. त्यामुळे 'संस्कृतविद्याभवन' या खाजगी शिकवणी वर्गाच्या माध्यमाने त्यांनी संस्कृत ज्ञानदानाचे कार्य केले. मी मात्र नंतर हिसार(हरियाणा) येथील दयानंद ब्राह्म महाविद्यालयात प्रवेश घेऊन 'विद्यावाचस्पती' झालो. पुढे शास्त्री व एम.ए.संस्कृत पदवी संपादन करून अमृतसर येथील आर्यसमाजात पुरोहित व प्रचारक रूपाने कार्य करू लागलो. त्या काळात स्व.रामस्वरूपजी माझ्याकडे तीन-चारदा येऊन गेले. या भेटीतून पिता-पुत्रांच्या भेटीचा साक्षात्कार झाला. माझी शैक्षणिक प्रगती पाहुन त्यांना फारच आनंद होत असे. अमृतसरहून रेणापुरला परतल्यानंतर अगदी महिनाभराच्या आतच त्यांचा आकस्मिक मृत्यू झाला व आम्हा सर्वांवरची पितृछाया लुप्त झाली. कांही वर्षानंतर (इ.स.१९८१मध्ये) मी अमृतसर सोडून महाराष्ट्रात आलो व आर्यसमाजाच्या परळीच्या माध्यमाने वैदिक धर्माच्या प्रचार व प्रसार कार्यात संलग्न झालो.

माझ्यावर लोखंडे दांपत्याची मायेची सावली नेहमीच राहिली आहे. आज जे काही चांगले संस्कार व सद्गुण जीवनात आहेत, ते सर्व त्यांच्यामुळेच! माता त्रिवेणीबाईंनी केलेल्या सामाजिक कार्याचे ऋण आणि कौटुंबिक जबाबदारीचे पेललेले ओझे हे निश्चितच नव्या समाजरचनेच्या जडणघडणीसाठी आदर्श ठरेल. त्यांचा खडतर जीवन प्रवास व आर्यसमाजाच्या नवपरिवर्तनवादी विचार व कार्याच्या प्रसारासाठी दिलेले योगदान खऱ्या अर्थाने संस्मरणीय राहिल. त्यांचे आर्यमय जीवन व कार्य जोपासणे, हीच खरी मातोश्रींना श्रद्धांजली ठरेल!

- शास्त्री जनरल स्टोअर्स,
आर्यसमाज,परळी/ मो.९८८१४१६९८६

सभा वार्ता..

सभेच्या वतीने उन्हाळी सुट्यात 'संस्कार शिबिरे'

महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधी सभेच्या वतीने उन्हाळी सुट्यांमध्ये विविध ठिकाणी मानवता संस्कार शिबिरांचे आयोजन करण्यात आले आहे. मे महिन्यात विविध तारखांना परभणी, उमरगा, कोल्हापुर व पुणे या ठिकाणी ही शिबिरे होणार असून आयोजनासंदर्भात त्या-त्या ठिकाणच्या आर्य कार्यकर्त्यांशी विचारविनिमय होत असल्याचे शिबिरप्रमुख प्रा.श्री अर्जुनराव सोमवंशी यांनी कळविले आहे. तरी शिबिरात सहभागी इच्छिणाऱ्या विद्यार्थी व पालकांनी प्रा.श्री.सोमवंशी यांचेशी ९४२२६१०३१३ या भ्रमणध्वनी क्रमांकावर संपर्क साधावा.

स्वास्थ्यरक्षा प्रशिक्षण शिबिर संपन्न

लंडन येथील आंतरराष्ट्रीय ख्यातीच्या दानशूर समाजसेविका स्व.माता शांतिदेवी मायर व सामाजिक कार्यकर्ते स्व.धर्मपालजी भसीन या दोघांच्या स्मरणार्थ परळी येथे नुकतेच "स्वास्थ्य रक्षा प्रशिक्षण शिबिर" घेण्यात आले. दि.२६ फेब्रुवारी ते ४ मार्च २०१८ या दरम्यान वैद्य श्री विज्ञानमुनिजी (प्रमुख, स्व.दीवानचंद मायर संजीवनी आरोग्य केंद्र) यांच्या मार्गदर्शनाखाली गुरुकुल आश्रम परळी येथे आयोजित या शिबिरात हैद्राबाद, औरंगाबाद, नांदेड, जालना आदी ठिकाणाहुन आलेल्या आरोग्यप्रेमी प्रशिक्षणार्थ्यांनी भाग घेतला. यात योगासन, सूक्ष्म व्यायाम, प्राणायाम यांच्यासह प्राकृतिक चिकित्सा प्रणालीचे प्रशिक्षण देण्यात आले. वमन, विरेचन, बस्ती, मृत्तिकालेप, जलनेती, बाष्फस्नान, कटिस्नान, पादस्नान, जीवनचर्या, संतुलित आहार आदी बाबींचे प्रशिक्षण शिबिरार्थ्यांना देण्यात आले. शिबिरादरम्यान सर्वश्री डॉ.शिवकांत अंदुरे, लक्ष्मणराव आर्य, प्रशांतकुमार शास्त्री, नयनकुमार आचार्य यांनी सैद्धांतिक विषयांवर मार्गदर्शन केले तर सभेचे भजनोपदेशक पं.प्रतापसिंहजी चौहान यांनी भजने गायिली. शेवटच्या दिवशी संस्थेचे प्रधान श्री जुगलकिशोर लोहिया यांच्या अध्यक्षतेखाली शिबिराचा समारोप झाला. यावेळी सर्वश्री स्वामी सम्यक् क्रांतिवेशजी, सोममुनिजी, देविदासराव कावरे, जयपाल लाहोटी आदी मान्यवर उपस्थित होते. कार्यक्रमात प्रशिक्षणार्थी सर्वश्री प्रा.पद्माकर आंबोदकर, उत्तमप्रकाश उबाळे, नारायणराव कुलकर्णी, प्रा.यादव भांगे, प्रा.शिवाक्षमाला सुरंगे यांनी आपले शिबिरकालीन अनुभव कथन केले. शिबिराच्या सफलतेसाठी सर्वश्री आर्यमुनिजी, सेवायती, लव्हांडे गुरुजी, अमृतमुनी, गोपालमुनी आदींनी प्रयत्न केले.

वार्ता विशेष.. दयानंदांच्या विचारांनीच सुख-शांती शक्य

जन्मोत्सव व बोधदिनी नारायणराव कुलकर्णी यांचे प्रतिपादन

महर्षी दयानंद हे विलक्षण प्रतिभेचे स्वामी होते. हजारो वर्षांच्या पुण्याईने असा क्रांतिकारी युगदृष्टा या धरतीला लाभला. त्यांच्या दिव्य वैदिक विचारांनीच जगात निर्माण झालेले अज्ञान, अविद्या, अंध:काराचे जाळे नष्ट होऊन सर्वत्र सुख-शांती नांदू शकेल, असे प्रतिपादन आर्य लेखक नारायणराव कुलकर्णी यांनी केले.

परळी येथील आर्य समाजात महर्षी दयानंदांचा १९४वां जन्मदिवस व बोधरात्रीपर्व हे संयुक्त कार्यक्रम पार पडले. याप्रसंगी श्री कुलकर्णी प्रमुख पाहुणे म्हणून बोलत होते. अध्यक्षस्थानी प्रधान श्री जुगलकिशोर लोहिया हे होते. यावेळी मंत्री उग्रसेनजी राठौर, कोषाध्यक्ष श्री देविदासराव कावरे, सभेचे प्रधान डॉ.ब्रह्ममुनिजी यांची प्रमुख उपस्थिती होती. आपल्या मार्गदर्शनपर भाषणात श्री कुलकर्णी यांनी महर्षी दयानदांच्या क्रांतिकारी जीवन व कार्यावर प्रकाश टाकला. महर्षींकडून वेदज्ञान मिळून ही समाज ते आचरणात आणत नाही आणि गुणकर्मांवर आधारित आश्रम व्यवस्थेचे पालन कृतीतून होत नाही, याबद्दल त्यांनी खंत व्यक्त केली. यावेळी सभाप्रधान डॉ.ब्रह्ममुनिजींनी वैदिक सिद्धांताचे पालन करण्यासाठी आर्यजनांनी प्रतिज्ञाबद्ध व्हावे, असे आवाहन केले. प्रारंभी पं.प्रशांतकुमारजी शास्त्री यांच्या ब्रह्मत्वाखाली झालेल्या यज्ञात यजमान म्हणून सौ. व श्री रमेश रंगनाथ तिवार, सौ. व श्री डॉ.जगदीश कावरे, ओमप्रकाश गट्टाणी हे यजमान म्हणून सहभागी झाले. प्रास्ताविक लक्ष्मणराव आर्य गुरुजी यांनी केले, संचलन व्यंकटेश आर्य यांनी तर आभार प्रदर्शन प्रा.अरुण चव्हाण यांनी केले.

माता जिंदम शताब्दी कार्यक्रम नांदेडला

वैदिक सेवाश्रम, नांदेच्या जडण-घडणीत मोलाची भूमिका बजावणाऱ्या व वैदिक विचारांचा वारसा खंबीरपणे चालवणाऱ्या कर्मठ आर्यमाता श्रीमती राधाबाई शिवरामजी जिंदम त्यांनी नुकतीच आपल्या यशस्वी जीवनाची १०० वर्षे पूर्ण केली. यानिमित्त त्यांचे पती स्व.शिवमुनिजी यांच्या पुण्यतिथीदिनी दि.१८ मे २०१८ रोजी स.११ वा. वैदिक सेवाश्रम वाजेगांव नांदेड येथे त्यांचा शताब्दी सोहळा आयोजित करण्यात आला आहे. त्यानिमित्त विशेष यज्ञ, भजन-प्रवचन कार्यक्रम होणार आहेत. तरी या कार्यक्रमास आर्यजनांनी उपस्थित रहावे, असे आवाहन प्रा.देवदत्त तुंगार व तुंगार प्रतिष्ठाणतर्फे करण्यात आले आहे.

मृत्युवार्ता...

रामराव सनातन यांचे निधन

आर्य समाजाच्या संस्कारातून घडलेले अभ्यासू व्यक्तिमत्त्व व उमरगा भागातील शिक्षणप्रेमी निवृत्त विस्तार अधिकारी श्री रामराव सदानंद सनातन (नाईचाकूर ता.उमरगा जि.उस्मानाबाद) यांचे २७ फेब्रुवारी २०१८ रोजी दु.१२.३० च्या दरम्यान हृदयविकाराच्या तीव्र धक्क्याने आकस्मिक दुःखद निधन झाले. मृत्यूसमयी ते ६७ वर्षे वयाचे होते. त्यांच्या मागे पत्नी, ३ मुलगे, एक मुलगी, सुना, जावई व नातवंडे असा परिवार आहे.

श्री सनातन हे श्रद्धानंद गुरुकुलाश्रमाचे दिवंगत आचार्य श्री शिवमुनिजींचे भाचे व ईवाई होते. अगदी लहानपणापासूनच औराद(ता.) येथील मयाचारी कुटुंबात अगदीच मुलाप्रमाणे वावरलेल्या व सुसंस्कारित झालेल्या राम सनातन यांचे शिक्षण गुंजोटी व उमरगा या ठिकाणी झाले. विद्यार्थी दशेत पू.हरिश्चंद्र गुरुजींच्या मानवता संस्कार शिबिरातही त्यांनी भाग घेतला होता.

माडज, नाईचाकुर, तुळजापुर, माहुर इत्यादी ठिकाणच्या जि.प.शाळांमध्ये शिक्षक, मुख्याध्यापक व शेवटी विस्तार अधिकारी म्हणून कार्य केले. विज्ञान हा अध्यापनाचा विषय असला तरी मराठी भाषेवर त्यांचे प्रभुत्त्व होते. ज्ञानेश्वरी, श्रीमद्भगवद्गीता, तुकारामांचे अभंग आदी संत साहित्यासह वैदिक ग्रंथावरही त्यांचा विशेष अभ्यास होता. व्याख्यान, प्रवचन व कीर्तनाच्या माध्यमातून ते समाजप्रबोधनही करीत. उमरगा येथील बसस्थानकावर गावाकडे जाणाऱ्या बसची वाट पाहत असतां त्यांना उमरगा बस आगाराच्या वतीने मराठी वाचन सप्ताहाचा कार्यक्रम सुरु असल्याचे लक्षात आले. मातृभाषेच्या आवडीपोटी लगेच ते पिशवी घेऊन कार्यक्रमस्थळी पोहोचले. संयोजकांना मनोगताकरिता वेळ मागून घेतला व ७ मिनिटांचे प्रभावशाली भाषण संपवून खुर्चीवर बसले असतांना लगेच हृदयविकाराचा झटका आला. उपस्थितांकडून तातडीने रुग्णालयातच पोहोंचविण्यापूर्वीच त्यांनी जगाचा निरोप घेतला. दिवंगत श्री सनातन यांच्या पार्थिवावर दुसऱ्या दिवशी सकाळी शोकाकूल वातावरणात अंत्यसंस्कार करण्यात आले. त्यांच्या या अकाली निधनाने उमरगा, औराद परिसरात हळहळ व्यक्त होत आहे.सभेतर्फे त्यांना श्रद्धांजली!

वैद्य सखाराम कराड कालवश

आर्य समाज परळीच्या वतीने संचालित, नंदागौळ मार्गावरील दीवानचंद मायर चिकित्सा केंद्रातील सहयोगी वैद्य श्री सखारामजी कुंडलिकराव कराड यांचे ६ मार्च २०१८ रोजी सायंकाळी कर्करोगाने दुःखद निधन झाले. मृत्युसमयी ते ९३ वर्षांचे होते. त्यांच्यामागे दोन मुली, एक मुलगा, जावई, सुन व नातवंडे आहेत.

मुळचे इंजेगाव ता.परळी येथील रहिवाशी असलेले श्री कराड हे जुन्या पिढीतील आयुर्वेद व निसर्गोपचाराचे अभ्यासक व जाणकार वैद्य होते. गेल्या २५ वर्षांपासून आर्यसमाजाच्या चिकित्सा केंद्रात वैद्य श्री विज्ञानमुनीजी यांचे सहकारी म्हणून त्यांनी सेवावृत्तीने काम पाहिले. ते शांत, मनमिळाऊ, सुस्वभावी आणि सात्विक व धार्मिक वृत्तीचे होते.स्व.कराड यांच्या पार्थिवावर दुसऱ्या दिवशी सकाळी ७ वा. पूर्ण वैदिक पद्धतीने अंतिम संस्कार करण्यात आले. अंत्यविधीच्या खर्चाचा सारा भार आर्यसमाज परळीने उचलून त्यांना आपली कृतज्ञभावनेने श्रद्धांजली वाहिली. वैद्य श्री विज्ञानमुनिजी व सोममुनिजी हा अंत्यविधी पार पाडला, तर आर्यमुनिजींनी सर्वांच्या वतीने श्रद्धांजली अर्पण केली.

लातूरच्या वार्षिकोत्सवात १४ कुंडीय यज्ञ

लातूर येथील गांधी चौक आर्य समाजाचा ८३ वा वार्षिकोत्सव दि.९ ते ११ मार्च दरम्यान उत्साहात संपन्न झाला. यावर्षीचा हा उत्सव आमंत्रित वैदिक विद्वान व भजनीकांमुळे फारच प्रभावी ठरला. आंतरराष्ट्रीय वैदिक प्रवक्ते आचार्य आनंद पुरुषार्थी(होशंगाबाद-म.प्र.) यांच्या विद्वत्तापूर्ण ओजस्वी प्रवचनांनी श्रोते फारच मंत्रमुग्ध झाले. ३ दिवसातील सकाळ व रात्रीच्या ज्ञानसत्रात श्री आचार्यजींनी तीन ऋण, यज्ञमहात्म्य, वेदोत्पत्ती, सोळा संस्कार, वर्ण व आश्रम व्यवस्था, सुखी जीवनाचे रहस्य, राष्ट्रीय समस्या व कर्तव्ये, ईश्वराचे स्वरूप व उपासना पद्धत इत्यादी विषयावर मौलिक विचार मांडले तर अत्याधुनिक संगीत वाद्यवृंदांच्या साथसंगतीने गायक पं.अजय आर्य(मेरठ-उ.प्र.) यांनी सादर केलेली भजने व गाणी ऐकून रसिकांची मने प्रफुल्लित झाली. समारोप दिनी पदाधिकाऱ्यांच्या प्रयत्नांमुळे ऐतिहासिक असा १४ कुंडीय सामूहिक यज्ञसोहळा पार पडला. यात जवळपास ५८ यजमान दांपत्यांनी व इतर आर्य कार्यकर्त्यांनी श्रद्धेने सहभागी होऊन वैदिक मंत्राहुत्या दिल्या. श्री पुरुषार्थी यांच्या प्रोत्साहानामुळे अल्पवेळेतच यज्ञाची व्यवस्था झाली व हा ऐतिहासिक सामूहिक यज्ञ यशस्वी ठरला.

॥ कृण्वन्तो विश्वमार्यम् ॥

श्रेष्ठ मानव बनों ! वेदों की ओर लौटो !

वेद प्रतिपादित मानवीय
जीवन मूल्यों को
जन-जन तक पहुँचाने हेतु
ार्यतत्पर सशक्त एवं समर्थ प्रान्तीय आर्य संगठन

महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा

(पंजीयन-एच. ३३३/र.नं.६/टी.इ. (७)१६७/१०४९,
स्थापना ५ मार्च १९७७)

मानव कल्याणकारी उपक्रम

- 'वैदिक गर्जना' मासिक मुखपत्र
- आर्य समाज दिनदर्शिका
- पू. हरिश्चन्द्र गुरूजी गौरव-'मानवता संस्कार एवं आर्यवीरदल शिविर'
- आर्य कन्या वैदिक संस्कार शिविर
- पातञ्जल ध्यानयोग शिविर
- प्रान्तीय आर्य वीर दल प्रशिक्षण शिविर
- पुरोहित प्रशिक्षण शिविर
- मानव जीवनकल्याण वेद प्रचार (श्रावणी) उपाकर्म अभियान
- स्व. विठ्ठलराव बिराजदार स्मृति विद्यालयीन राज्य. वक्तृत्व स्पर्धा
- सौ. तारादेवी जयनारायणजी मुंदड़ा विद्यालयीन राज्य.निबंध स्पर्धा
- सौ. कलावतीबाई व श्री मन्मथअप्पा चिल्ले (आनन्दमुनि) महाविद्यालयीन राज्य. वक्तृत्व स्पर्धा
- विद्यार्थी सहायता योजना
- सौ.डॉ. विमलादेवी व श्री डॉ.सु.ब.काले (ब्रह्ममुनि) महाविद्यालयीन राज्य. निबन्ध स्पर्धा
- स्व.पं. रामस्वरूप लोखण्डे स्मृति संस्कृत राज्य प्रतियोगिताएं
- मानवजीवन निर्माण अभियान - विद्यालय व महाविद्यालयों के लिए (वैदिक व्याख्यानमाला)
- शान्तिदेवी मायर स्मृति मानवनिर्माण एवं सेवा योजना
- स्व. भसीन स्मृति एवं मायर गौरव स्वास्थ्य रक्षा एवं चिकित्सा शिविर
- शान्तिदेवी मायर विधवा सहायता योजना
- वैदिक साहित्य भेट योजना
- पंथ-जातिप्रथा निर्मूलन अभियान
- वैदिक साहित्य प्रकाशन योजना
- आपत्कालीन सहायता योजना
- पर्जन्यवृष्टि यज्ञ अभियान
- गौ-कृषि सेवा योजना
- स्वा.सै.श्री गुलाबचंदजी लदनिया गौरव राज्य योगासन प्रतियोगिता
- सौ.धापादेवी गु. लदनिया गौरव राज्य प्राणायाम प्रतियोगिता

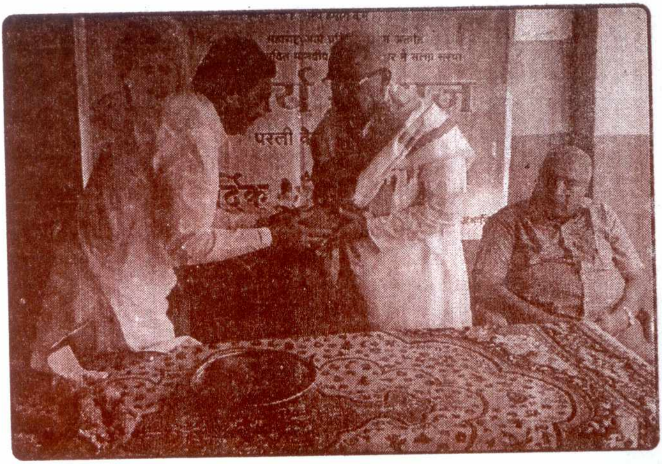

जन्मोत्सव व बोधपर्व

आर्य समाज परली में आयोजित दयानंद जन्मोत्सव व ऋषि बोधपर्व आमन्त्रित व्याख्याता श्री नारायणराव कुलकर्णी का सम्मान करते हुए श्री जुगलकिशोर लोहिया।

उपस्थित श्रोताओं को मार्गदर्शन करते हुए श्री कुलकर्णीजी। साथ में हैं प्रधान श्री लोहिया एवं कोषाध्यक्ष श्री देविदासराव कावरे।

आर्य समाज रामनगर लातूर में आयोजित चिल्ले गौरव राज्यस्तरीय स्पर्धा २०१७ में तृतीय क्रमांक प्राप्त कु.कोमल रोडे(परली) को पारितोषिक प्रदान करते हुए सर्वश्री दिवे, मोरे, लोखंडे आदि।

Reg.No.MAHBIL/2007/7493*Postal No.L/Beed/24/2018-2020

सेवा में,
श्री. ____________________

प्रेषक -
मन्त्री, महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा,
आर्य समाज, परली-वैजनाथ.
पिन ४३१ ५१५ जि.बीड (महाराष्ट्र)

यह मासिक पत्र सम्पादक व प्रकाशक श्री मन्त्री, महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा वैदिक प्रिंटर्स, परली वैजनाथ इस स्थलपर मुद्रित कर महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा के संपर्क कार्यालय-आर्य समाज, परली वैजनाथ ४३१५१५ (महाराष्ट्र) इस स्थान से प्रकाशित किया।

भावपूर्ण श्रद्धांजलि !

।। ओ३म् ।।

हैदराबाद स्वतन्त्रता संग्राम के स्वाधीनता सैनिक,
हिन्दी रक्षा आन्दोलन के सत्याग्रही,
लोकमान्य शिक्षण संस्था, पानचिंचोली
(ता.निलंगा जि.लातुर) के संस्थापक, समाजसेवी व्यक्तित्त्व
स्व.श्री.वासुदेवराव हनुमंतराव होलीकर
की पावन स्मृतिमें उनकी सहधर्मचारिणी
श्रीमती रुक्मिणीदेवी वासुदेवराव होलीकर
की ओर से वैदिक गर्जना मासिक का रंगीन मुखपृष्ठ भेंट

जीवेत् शरदः शतम् !